बाल गीत संग्रह : इंद्रधनुष

कवि परिचय कुलवंत सिंह

जन्म : 11 जनवरी, रूड़की, उत्तरांखंड
प्राथमिक शिक्षा: सरस्वती शिशु शिक्षा मंदिर, करनैलगंज गोंडा (उ.प्र.)
हाईस्कूल / इंटरमीडिएट: ब्राम्हण संस्कृत विद्यालय, रूड़की
उच्च शिक्षा: बी टेक, आई.आई.टी.,रूड़की (रजत पदक एवं 3 अन्य पदक)
पी एच डी: मुंबई युनिवर्सिटी
रचनाएं प्रकाशित: साहित्यिक पत्रिकाओं, परमाणु ऊर्जा विभाग, राजभाषा विभाग, केंद्र सरकार की विभिन्न गृह पत्रिकाओं, वैज्ञानिक, विज्ञान, आविष्कार, अंतरजाल पत्रिकाओं में अनेक साहित्यिक एवं वैज्ञानिक रचनाएं
पुरस्कृत: काव्य, लेख, विज्ञान लेखों, विभागीय हिंदी सेवाओं के लिए एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरूस्कृत
सेवाएं: 'हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद' से 15 वर्षों से संबंधित.
'वैज्ञानिक' त्रैमासिक पत्रिका संपादन, हिंदी में विज्ञान प्रश्न मंचों का परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अन्य संस्थानों के लिए अखिल भारत स्तर पर आयोजन, क्विज मास्टर
संप्रति :वैज्ञानिक अधिकारी, पदार्थ संसाधन प्रभाग, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई - 400085
निवास : 1 बी, गुलमर्ग बिल्डिंग, अणुशक्तिनगर, मुंबई -400094
फोन : 022-25595378 (O)
ईमेल : **kavi.kulwant@gmail.com**

1. मोर

सात रंग से घिरा गगन है, छत पर बैठा मोर मगन है .

अंबर इंद्रधनुष प्रस्फुटित, धरती गर्वित, मोर प्रफुल्लित .

दिव्य छटा सी अंबर छाई, मयूरा धरती ले अंगड़ाई .

कूक रहा है अंगना मोर, पी की याद सताये घोर .

परत परत मन खोल रहा है, मन मयूर सा डोल रहा है .

स्वप्न सजाया, हुआ है पूरा, छत पर आया नाच मयूरा .

घनन घनन हैं मेघा छाये, मोर कूक कर मन हर्षाये .

झूम झूम कर घिरी है बदरी, मोर आया है अपनी नगरी .

रंग प्रकृति के सभी चटक, मन मयूर सा रहा मटक .

अखिल प्रकृति की ले सुंदरता, मेघा छाये, मोर मटकता .

तृप्ति - धरा, घन मेघा बरसे, नाच मोर, मन पी को तरसे .

झूमे अंबर झूमे धरती, दर्पित, गर्वित, हर्षित करती .

2. होली का त्यौहार

होली का त्यौहार ।
रंगों का उपहार ।

प्रकृति खिली है खूब ।
नरम नरम है दूब ।

भांत भांत के रूप।
भली लगे है धूप।

गुझिया औ मिष्ठान ।
खूब बने पकवान ।

भूल गये सब बैर ।
अपने लगते गैर ।

पिचकारी की धार ।
पानी भर कर मार ।

रंगों की बौछार।
मस्ती भरी फुहार ।

मीत बने हैं आज
खोल रहे हैं राज ।

नीला पीला लाल ।
चेहरों पे गुलाल ।

खूब छनी है भांग ।
बड़ों बड़ों का स्वांग।

मस्ती से सब चूर ।
उछल कूद भरपूर ।

आज एक पहचान ।
रंगा रंग इनसान ।

3. भारती

भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती .

देश के युग तरुण कहाँ हो ?
नव सृष्टि के सृजक कहाँ हो ?
विजय पथ के धनी कहाँ हो ?
रथ प्रगति का सजा सारथी .
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती .

शौर्य सूर्य सा शाश्वत रहे,
धार प्रीत बन गंगा बहे,
जन्म ले जो तुझे माँ कहे,
देव - भू पुण्य है भारती .
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती .

राष्ट्र ध्वज सदा ऊँचा रहे,
चरणों में शीश झुका रहे,
दुश्मन यहाँ न पल भर रहे,
मिल के सब गायें आरती .
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती .

आस्था भक्ति वीरता रहे,
प्रेम, त्याग, मान, दया रहे,
मन में बस मानवता रहे,
माँ अपने पुत्र निहरती .
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती .

द्रोह का कोई न स्वर रहे,
हिंसा से अब न रक्त बहे,
प्रहरी बन हम तत्पर रहें,
सैनिकों को माँ निहारती .
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती .

4. एकता की ताकत

एक बार की बात है,
अब तक हमको याद है.
जंगल में थे हम होते,
पांच शेर देखे सोते.

थोड़ी आहट पर हिलते,
आंख जरा खोल देखते.
धीरे से आंख झपकते,
साथी से कुछ ज्यों कहते.

दूर दिखीं आती काया,
झुरमुट भैंसों का आया.
नन्हा बछड़ा एक उसमें,
आगे सबसे चलने में.

शेर हुए चौकन्ने थे,
घात लगाकर बैठे थे.
पास जरा झुरमुट आया,
खुद को फुर्तीला पाया .

हमला भैंसों पर बोला,
झुरमुट भैंसों का डोला .
उलटे पांव भैंसें भागीं,
सर पर रख कर पांव भागीं .

बछड़ा सबसे आगे था,
अब वो लेकिन पीछे था .
बछड़ा था कुछ फुर्तीला,
थोड़ा वह आगे निकला .

भाग रहीं भैंसें आगे,
उनके पीछे शेर भागे .
बछड़े को कमजोर पाया,
इक शेर ने उसे भगाया .

बछड़ा है आसान पाना,
शेर ने साधा निशाना .
बछड़े पर छलांग लगाई,
मुंह में उसकी टांग दबाई .

दोनों ने पलटी खाई,
टांग उसकी छूट न पाई .
गिरे पास बहती नदी में
उलट पलट दोनों उसमें .

रुके बाकी शेर दौड़ते,
हुआ प्रबंध भोज देखते .
शेर लगा बछड़ा खींचने,
पानी से बाहर करने .

बाकी शेर पास आये,
नदी किनारे खींच लाये .
मिल कर खींच रहे बछड़ा,
तभी हुआ नया इक पचड़ा .

घड़ियाल एक नदी में था,
दौड़ा, गंध बछड़े की पा .
दूजी टांग उसने दबाई,
नदी के अंदर की खिंचाई .

शेर नदी के बाहर खींचे,
घड़ियाल पानी अंदर खींचे .
बछड़ा बिलकुल पस्त हुआ,
बेदम और बेहाल हुआ .

खींचातानी लगी रही
घड़ियाल एक, शेर कई .
धीरे धीरे खींच लाए,
शेर नदी के बाहर लाए .

घड़ियाल हिम्मत हार गया,
टांग छोड़ कर भाग गया .
शेर सभी मिल पास आये,
बछड़ा खाने बैठ गये .

तभी हुआ नया तमाशा,
बछड़े को जागी आशा .
भैंसों ने झुंड बनाया,
वापिस लौट वहीं आया .

हिम्मत अपनी मिल जुटाई,
देकर बछड़े की दुहाई .
शेरों को लगे डराने,
भैंसे मिलकर लगे भगाने .

टस से मस शेर न होते,
गीदड़ भभकी से न डरते .
इक भैंसे ने वार किया,
शेर को खूब पछाड़ दिया .

दूसरे ने हिम्मत पाई,
दूजे शेर पे की चढ़ाई .
सींग मार उसे हटाया,
पीछे दौड़ दूर भगाया .

तीसरे ने ताव खाया,
गुर्राता भैंसा आया .
सींगों पर सिंह को डाला,
हवा में किंग को उछाला .

बाकी थे दो शेर बचे,
थोड़े सहमें, थोड़े डरे .
आ आ कर सींग दिखायें,
भैंसे शेरों को डरायें .

भैंसों का झुंड डटा रहा,
बछड़ा लेने अड़ा रहा .
हिम्मत बछड़े में आई,
देख कुटुंब जान आई .

घायल बछड़ा गिरा हुआ,
जैसे तैसे खड़ा हुआ .
झुंड ने उसको बीच लिया,
बचे शेर को परे किया .

शेर शिकार को छोड़ गये,
मोड़ के मुंह वह चले गये .
शेरों ने मुंह की खाई,
भैंसों ने जीत मनाई .

जाग जाये जब जनता,
राजा भी पानी भरता .
छोटा, मोटा तो डरता,
हो बड़ों की हालत खस्ता .

मिलजुल हम रहना सीखें,
न किसी से डरना सीखें .
एकता में ताकत होती,
जीने का संबल देती .

5. नव वर्ष

नव सृजन, नव हर्ष की,
कामना उत्कर्ष की,
सत्य का संकल्प ले
प्रात है नव वर्ष की .

कल्पना साकर कर,
नम्रता आधार कर,
भोर नव, नव रश्मियां
शक्ति का संचार कर .

ज्ञान का सम्मान कर,
आचरण निर्माण कर,
प्रेम का प्रतिदान दे
मनुज का सत्कार कर .

त्याग कर संघर्ष का,
आगमन नव वर्ष का,
खिल रही उद्यान में
ज्यों नव कली स्पर्श का .

प्रेम की धारा बहे,
लोचन न आंसू रहे,
नवल वर्ष अभिनंदन
प्रकृति का कण कण कहे .

6. तितली

रंग बिरंगी तितली
उड़ती फिरती तितली
इस फूल से उस फूल
संग हवा के झूमती .

कितना निर्मल जीवन
कितना पावन जीवन
खुशियों की ले सौगात
महका बहका जीवन .

जीवन हर्षित करती
स्वर्ग बने यह धरती
बाग में जैसे तितली
उन्मुक्त हवा में उड़ती .

विकार रहें सब दूर
चित्त निर्मल भरपूर
दुख गम से अनजान
चेहरे पर छाये नूर .

7. गीत - अभिलाषा

बन दीपक मैं ज्योति जगाऊँ
अंधेरों को दूर भगाऊँ,
दे दो दाता मुझको शक्ति
शैतानों को मार गिराऊँ ।

बन पराग कण फूल खिलाऊँ
सबके जीवन को महकाऊँ,
दे दो दाता मुझको भक्ति
तेरे नाम का रस बरसाऊँ ।

बन मुस्कान हंसी सजाऊँ
सबके अधरों पर बस जाऊँ,
दे दो दाता मुझको करुणा
पाषाण हृदय मैं पिघलाऊँ ।

बन कंपन मैं उर धड़काऊँ
जीवन सबका मधुर बनाऊँ,
दे दो दाता मुझको प्रीति
जग में अपनापन बिखराऊँ ।

बन चेतन मैं जड़ता मिटाऊँ
मानव मन मैं मृदुल बनाऊँ,
दे दो दाता मुझको दीप्ति
जगमग जगमग जग हर्षाऊँ ।

8. गीत - आओ दीप जलाएँ
आओ खुशी बिखराएँ छाया जहां गम है ।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

एक किरण भी ज्योति की
आशा जगाती मन में;
एक हाथ भी कांधे पर
पुलक जगाती तन में;
आओ तान छेड़ें, खोया जहाँ सरगम है।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

एक मुस्कान भी निश्छल
जीवन को देती संबल;
प्रभु पाने की चाहत
निर्बल में भर देती बल;
आओ हंसी बसाएँ, हुई आँखे जहां नम हैं।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

स्नेह मिले जो अपनो का
जीवन बन जाता गीत;
प्यार से मीठी बोली
दुश्मन को बना दे मीत;
निर्भय करें जीवन जहाँ मनु गया सहम है।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

9. रानी बिटिया सो जा

रानी बिटिया सो जा
रात हुई है सो जा
सारे पक्षी सो गये
तू भी बिटिया सो जा .

पेड़ पौधे सो गये
पशु सारे सो गये
सूरज भी है सोया
तू भी बिटिया सो जा .

मीठी नींद आयेगी
मधुर स्वप्न लायेगी
परियां उड़ आएंगी
गोद में खिलाएंगी .

चांद तारे आ गये
सारे नभ में छा गये
टिम टिम कर के बोले
अब तो बिटिया सो जा .

सुबह सूरज आयेगा
सबको वह जगाएगा
रात हो गई ज्यादा
तू भी बिटिया सो जा .

10. अमृत प्यार
माँ के प्यार की महिमा का, करता हूँ गुणगान,
कभी कमी न प्यार में होती, कैसी है यह खान .
कष्ट जन्म का सहती है, फिर भी लुटाती जान,
सीने से चिपकाती है, हो कैसी भी संतान .

छाती से दूध पिलाती है, देती है वरदान,
पाकर आंचल की छांव, मिलता है सुख बड़ा महान.
इसके प्यार की महिमा का, कोई नही उपमान,
अपनी संतति को सुख देना ही इसका अरमान .

अंतस्तल में भरा हुआ है, ममता का भंडार,
संतानों पे खूब लुटाती, खत्म न होता प्यार .
ले बलाएं वह संतति की, दे खुशियों का संसार,
छू न पाए संतानों को, कष्टों का अंगार .

दुख संतति का आंख में बहता, बन कर अश्रुधार,
हर लेती वह पीड़ा सुत की, कैसा हो विकार .
संकट आएं कितने भारी, खुद पर ले हर बार,
भाग्य बड़े हैं जिनको मिलता, माँ का अमृत प्यार .

11. माँ इसको कहते
जब भारत ने हमें पुकारा,
इक पल भी है नही विचारा,
जान निछावर करने को हम
तत्पर हैं रहते .
माँ इसको कहते .

इस धरती ने हमको पाला,
तन अपना है इसने ढ़ाला,
इसकी पावन संस्कृति में हम
सराबोर रहते .
माँ इसको कहते .

इसकी गोदी में हम खेले,
गिरे पड़े और फिर संभले,

इसकी गौरव गरिमा का हम
मान सदा करते.
माँ इसको कहते .

देश धर्म क्या हमने जाना,
अपनी संस्कृति को पहचाना,
जाएँ कहीं भी विश्व में हम
याद इसे रखते .
माँ इसको कहते .

मिल जुल कर है हमको रहना,
नहीं किसी से कभी झगड़ना,
मानवता की ज्योत जला हम
प्रेम भाव रखते .
माँ इसको कहते .

12. लोरी

लोरी जब भी गाती माँ,
मीठी नींद सुलाती माँ .

कथा कहानी गाती माँ,
प्यारे गीत सुनाती माँ .

माथा जब सहलाती माँ,
डर को दूर भगाती माँ .

गोदी में बहलाती माँ,
स्वर्ग धरा दिखलाती माँ .

थपकियां दे सुलाती माँ,
निंदिया पास बुलाती माँ .

नींद न मुझको आती माँ,
अपने गले लगाती माँ .

प्यार तेरा अनूठा माँ,
नींद में ख्वाब सजाती माँ .

जब भी तुझको देखूँ माँ,
सबसे सुंदर लगती माँ .

13. सीखो

सुबह सवेरे उठना सीखो,
रवि से पहले जगना सीखो .

कसरत थोड़ी करना सीखो,
तन को सुडौल रखना सीखो .

प्रेम सभी से करना सीखो,
मीठी वाणी कहना सीखो .

दीन दुखी पर करुणा सीखो,
सत्य न्याय पर मरना सीखो .

दूर अहम से रहना सीखो,
नेह सभी से रखना सीखो .

समय बड़ा अमूल्य है सीखो,
करना इसकी कद्र है सीखो .

ज्ञान जगत में बिखरा सीखो,
प्रकृति नियम पर चलना सीखो .

सादा जीवन जीना सीखो,
रखना उच्च विचार सीखो .

नव विज्ञान ढ़ेर सा सीखो,
बनना है महान यह सीखो .

तन बुद्धि शुद्ध रखना सीखो,
खान पान में संयम सीखो .

मान बड़ों को देना सीखो,
आशीष उनसे लेना सीखो .

जीवन है वरदान सीखो,
जीवन हस हस जीना सीखो .

14. भाई

कितना नटखट मेरा भाई,
खूब शैतानी करता भाई .
उसकी मस्ती से सब डरते
पर डांट कभी न उसने खाई .

मुझसे लेकिन वह है डरता,
मेरी सब बातें वह सुनता .
चोरी उसकी जब मैं पकड़ूं
वह कान भी अपने पकड़ता .

पढ़ने में वह अव्वल रहता,
गलत नही वह कुछ भी सहता .
खेलकूद में सबसे आगे,
पर मुझसे वह जीत न सकता .

दीवाली हो यां फिर होली,
करता है वह खूब ठिठोली .
लड़ता चाहे कितना मुझसे,
मीठी बड़ी है उसकी बोली .

दुनिया में है सबसे न्यारा,
भाई बहन का रिश्ता प्यारा .
रक्षा बंधन हो यां दूज,
प्यार की बहती पावन धारा .

15. बहना

मेरी बहना का क्या कहना
चपल सलोनी हर पल हसना .
लड़ना भिड़ना और झगड़ना
लेकिन फिर मिल जुल कर रहना .

बुलबुल सी दिन रात फुदकना
नही किसी से कभी भी डरना .
सीढ़ी ले छज्जे पर चढ़ना
उसके बिन सूना है अंगना .

धमा चौकड़ी खूब मचाती
मेरी पुस्तक वह छिपाती .
खिलौने लेकर भाग जाती
पर पापा से डांट न पाती .

सुबह देर तक सोती रहती
लेकिन मम्मी भी चुप रहती .
टिकिया चाट मजे से खाती
मेरी प्लेट भी गप कर जाती .

वैसे तो मुझसे वह लड़ती
हर चीज अपनी वह समझती .
कोई जरूरत जब आ पड़ती
बड़े प्यार से भैया कहती .

मेरी बहना का क्या कहना
शोख है चंचल घर का गहना .
ईश्वर मेरी बात तूं सुनना
सबको ऐसी बहना देना .

16. फूल

कोमल कोमल फूल
प्यारे प्यारे फूल .

रंग रंग के फूल
निखरे निखरे फूल .

हर पल हंसते फूल
मुस्काते हैं फूल .

बाग खिलाते फूल
जग महकाते फूल .

हार बनाते फूल
मंदिर चढ़ते फूल .

वेणी बनते फूल
बाल में सजते फूल .

सेज सजाते फूल
शव पर चढ़ते फूल .

भंवरे जाते फूल
जब भी मिलते फूल .

सीख सिखाते फूल
रहे न मन में शूल .

खूब लगे इनसान
फूल सजे परिधान .

फूलों से सत्कार
सबको इनसे प्यार .

बनकर फूल समान
बांटो खुशी जहान .

17. आम

सभी फलों का बाप
आम खाओ आप .

कैसे कैसे नाम
सबको कहते आम .

आपुस मलीहाबाद
लंगड़ा जिंदाबाद .

केशर दसहरी खास
सबको आते रास .

मिठास से भरपूर
गूदे रस से चूर .

आम भले हो एक
गुण इसके अनेक .

अमिया बने अचार
पियो बना के सार .

दाल में कच्चा डाल
अमचूर पूरा साल .

गर्मी से बेहाल
'पना' करे निहाल .

फलों का राज आम
खाओ, न देखो दाम .

18. भोजन

भोजन से संसार
भोजन दे आधार .

भोजन को दो मान
गेहूँ हो याँ धान .

तरह तरह के भोज
चाहें सब हर रोज .

भूख से हो कर तंग
शिथिल हो जाते अंग .

भोजन मिले तो जान
तन में खिलते प्राण .

मत करना अपमान
भोजन है भगवान .

भोजन से अनजान
कोई नही इंसान .

मिले भोज दो वक्त
तन में बनता रक्त .

खेत जोते किसान
उसको दें सम्मान .

पेट जो खाली जान
भोजन देना दान .

भोजन है आधार
जग जीवन का सार .

19. विज्ञान

जन जीवन को सुखी बनाया
देखो यह विज्ञान की माया
नित नया अन्वेष कराया
जन जन तक इसको पहुंचाया .

सुख सुविधा के ढ़ेर लगाए
स्वर्ग धरा पर यह दिखलाए
बिजली, कूलर, पंखा आए
फ्रिज, ए. सी. ठंडा रखवाए .

गाड़ी, मोटर, प्लेन जरूरी
दूर लगे न कोई भी दूरी
आशा सबकी करते पूरी
पैसा रखना जेब जरूरी .

दूर गगन में धाक जमाई
उपग्रह की भरमार लगाई
चंदा की धरती खुदवाई
मंगल की भी सैर कराई .

सागर में भी पैठ लगाई
पनडुब्बी में दौड़ लगाई
सागर तल की कर खुदवाई
ईंधन की भरमार लगाई .

कंप्यूटर का खेल निराला
हर कोई जपता इसकी माला
मोबाइल जेब में सबने डाला
भैया, दीदी, मम्मी, खाला .

खुशियां सबके जीवन आएं
मिलकर आओ बांटें खाएं
द्वेष शत्रुता भूल जाएं
जग में हर जीवन महकाएं .

20. धरती का श्रंगार

भूल गया पेड़ों का दान
मानव क्या इतना नादान

काट काट कर जंगल नाश
खुद अपना कर रहा विनाश

स्वार्थ बना है इसका मूल
गुड़ पेड़ के गया है भूल

यही हैं देते प्राण वायु
इनसे मिलती लंबी आयु

करते अपना यह उपचार
करते हम पर यह उपकार

तरह तरह के देते फूल
कम करते यह मिट्टी धूल

औषधि का देते सामान
हम भूले इनकी पहचान

कैसा है अधुना इनसान
रखें याद न सृष्टि विधान

मानवता से कैसा वैर
काट रहा खुद अपने पैर

साध रहा बस अपने स्वार्थ
भूल गया है यह परमार्थ

पेड़ों की हम सुनें पुकार
बंद करें अब अत्याचार

यह हैं धरती का श्रृंगार
इनसे ही जीवन साकार

21. रुपया

रुपया बड़ा महान
सब करते गुणगान
रुपया है जहान
इससे मिलता मान .

भूल गये सम्मान
ताऊ अब्बा जान
रुपया है वरदान
सभी गुणों की खान .

रुपया दे अभिमान
दुर्बल को दे जान
रुपयों से है शान
इसे कमाना ठान .

सबका है अरमान
रुपयों की हो खान
इसको पा शैतान
लगता है इंसान .

जो पाये अनजान
दुनिया कहे महान
जीवन लगता तान
दे मान संतान .

रुपया कर परवान
बदले राज विधान
बिकता है ईमान
मोल लगाना जान .
रुपया बड़ा महान
सब करते गुणगान .

22. जहाँ चाह वहीं राह

जहाँ चाह है वहीं राह है
इसे न जाना भूल .
जो न करता प्रयत्न कभी भी
उसको मिलता शूल .

कंटक हैं हर राह अनेकों
हिम्मत कभी न हार .
जब पहुँचोगे तुम मंजिल पर
मिलें अनेकों हार .

अवसर कभी न खोना यूँ हीं
छोटा न कोई काम .
चढ़ते चढ़्ते चढ़ जाता नर
पर्वत पर हो धाम .

इक इक अणु जब वाष्पित होता
बनकर छाये मेघ .
इक इक बूंद से भरता घड़ा
मिलकर बाँटो नेह .

कण कण से ही बनता मधुरस
कण कण से संसार .
कण कण से ही बना हुआ है
अखिल विश्व अपार .

हिम्म्त कर बस चलना सीखो
मन में हो उत्साह .
हार जीत तो मन से होती
करो न कुछ परवाह .

तुम भी जग में चलना सीखो
पाओगे हर राह .
जग में जो भी फिर चाहोगे
पूरी होगी चाह .

23. कदम बढ़ाकर

कभी नही घबराना
कदम बढ़ाकर चलते जाना
मंजिल तुमको पाना.

चलते रहना जिसने सीखा
मंजिल है वह पाता
जीवन से जो कभी न हारे
वीर वही कहलाता.
साहस शौर्य जिसने दिखलाया
जग ने उसको माना.

मानवता का पहनो चोला
दीनों का दुख हरने

पर पीड़ा को अनुभव करने
घाव दुखों का भरने
खुशियां भले ही बांट न पाओ
दुख न कभी पहुंचाना.

घोर निराशा कितनी छाए
धीरज कबी न खोना
सौ बार भले ही हारो तुम
हार पे तुम न रोना
समय की कीमत तुम पहचानो
समय कभी न गंवाना.

हर ओर तुम्हारे छल खल हो
फिर भी हंसते जाना
चीर तिमिर को, सत्य, न्याय औ
प्रेम लुटाते जाना
कदम बढ़ाकर चलते जान
कोशिश करते जाना.

24. सुनो सुनो

सब आओ
बात सुनो
होठों पर
प्रीत गुनो

यह मेरा
वह तेरा
यह पचड़ा
छोड़ जरा

भूलो दुख
बांटो सुख
दीन से न
मोड़ो मुख

तूँ छोटा
मैं खोटा
बिन पेंदी
सब लोटा

अंतर्मन
झांको तुम
सत्य प्रेम
बांटो तुम

न यह बड़ा
न वह बड़ा
इस जग में
काल बड़ा

फूल खिला
हाथ मिला
हर मुख पर
हंसी सजा

गले लगा
प्यार जगा
सबके दुख
दूर भगा

सुनो सुनो
बात सुनो
प्रीत प्रेम
सभी चुनो

25. चंदामामा

चंदा रहते हो किस देश ।
लगते हो तुम सदा विशेष ।

रहते हो तुम भले ही दूर ।
मुख पर रहता हर पल नूर ।

दिखते हो तुम शीतल शांत ।
सागर हो तुम्हे देख अशांत ।

बने सलोनी तुमसे रात ।
करते हैं सब तुमसे बात ।

घटते बढ़ते हो दिन रात ।
समझ न आये हमको बात ।

कभी चमकते बन कर थाल ।
गायब हो कर करो कमाल ।

शीतलता का देते दान ।
नही चाँदनी का उपमान ।

तारों को है तुमसे प्रीत ।
रात बिताते बन कर मीत ।

धवल चांदनी का आभास ।
मन में भरे हर्ष उल्लास ।

करवा चौथ भले हो ईद ।
देख तुम्हे मनते यह तीज ।

पूरा छिप जाते जिस रात ।
बन जाती वह काली रात ।

थकते नही तुम्हारे अंग ।
घूम घूम कर धरती संग ।

चंदा रहते हो किस देश ।
लगते हो तुम सदा विशेष ।

26. होली आई

हम बच्चों की मस्ती आई
होली आई होली आई ।
झूमें नाचें मौज करें सब
होली आई होली आई ।

रंग रंग में रंगे हैं सब
सबने एक पहचान पाई ।
भूल गए सब खुद को आज
होली आई होली आई ।

अबीर गुलाल उड़ा उड़ा कर
ढ़ोल बजाती टोली आई ।
अब अपने ही लगते आज
होली आई होली आई ।

दही बड़ा औ चाट पकोड़ी
खूब दबा कर हमने खाई ।
रसगुल्ले गुझिया मालपुए
होली आई होली आई ।

लाल हरा और नीला पीला
है रंगों की बहार आई ।
फागुन में रंगीनी छाई
होली आई होली आई ।

27. कोयल

तान सुरीली कोयल की है ।
बोली मीठी कोयल की है ॥

अमिया पर जब कुहुक सुनाए,
सबके दिल में खुशी जगाए,
कुहुक कुहुक कर कोयल कूदे
बात निराली कोयल की है ।

धरती पर हरियाली छाये,
कोयल की बोली मन भाये,
वन अपवन में उड़ती फिरती
अदा निराली कोयल की है ।

दिखती तो है बिलकुल काली,
लेकिन लगती भोली भाली,
सबके मन को भा जाती है
बात सुहानी कोयल की है ।

अपनी मस्ती में रहती है,
परवाह नही कुछ करती है,
अपने अण्डे कौवे को दे
चालाकी यह कोयल की है ।

बुरा नही सब काला होता,
अंदर बाहर एक न होता,
जब भी बोलो मीठा बोलो
बोली जैसी कोयल की है ।

28. मीठी बोली

बोली में रस घोलना
सदा मधुर है बोलना

तोल मोल के बोलना
दिल के धागे खोलना

गांठ में बात बांध लो
बात न लौटे जान लो

मीठी वाणी फूल है
गुस्सा करना भूल है

सच इसका आधार है
प्रेम वचन शृंगार है

बोलो सबका हो भला
कर सके न कोई गिला

झूठ वचन इनकार हो
सच्चाई से प्यार हो

झूठ दुखों का मूल है
दिल में चुभता शूल है

कड़वा कभी न बोलना
बात को पहले तोलना

बोली है आराधना
सरस्वती की साधना

मीठी बोली सीख लो
लोगों के दिल जीत लो

29. परोपकार

परहित जैसा धरम न कोई,
सब करते गुणगान ।
सब धर्मों में सार छिपा है,
सेवा यही महान ।

जिसने भी इसको अपनाया
चला ईश की राह ।

सत्य, अहिंसा, दया भावना,
इसी राह की चाह ।

धन वैभव का मोल नही कुछ,
किया न पर उपकार ।
ज्ञान, ध्यान की क्या है कीमत
किया न कुछ उपकार ।

जग में जीवन सफल उसी का
करता जो उपकार ।
मिलता प्रेम, प्रसिद्धि उसी को
जग करता सत्कार ।

मानवता है इसका गहना
क्षमा, न्याय आधार ।
सत्कर्मों की बहती धारा
प्रेमपूर्ण व्यवहार ।

30. सदा खुश रहो
खुशी मनाओ दिन औ रात ।
जाड़ा, गरमी हो बरसात ॥

खुशी बने जीवन का भाग,
खुशी ही हो जीवन का राग,
खुशियों से मिलता अनुराग,
खुशियों से जागे सौभाग,

खुशी है अनमोल सौगात ।
खुशी लगे नवदिवस प्रभात ॥

दुश्मन हों कितने ही पास,
देते हों कितना ही त्रास,
करना चाहें भले विनाश,
फिर भी मुख पर रखो हास,

खुशियों की है अपनी बात ।
सूरज छिपता काली रात ॥

खुशियों से बढ़ता है प्यार,
रहे न तन में कोई विकार,
मन में खिलते पुष्प विचार,
जीवन महके बाग बहार,

खुशियों से मिटते आघात ।
खुशियां ने देखें कोई जात ॥

खुशियों से मिट जाएं रोग,
रहे न मन में कोई सोग,
खुशी मनाते हैं जो लोग,
काया हर पल रहे निरोग,

चाहे भूलो सारी बात ।
खुशी मनाओ दिन औ रात ॥

31. जीवन को गीत बनाएँ

जीवन को इक गीत बनाएँ
सुर ताल से इसे सजाएँ ।
खुशबू से इसको महकाएँ
अधरों से सदा गुनगुनाएँ ।

खुशियों की हो छांव घनेरी
आशा निखरी धूप सुनहरी ।
कल कल बहती नदिया गहरी
उपवन भरी छटा हो छहरी ।

जीवन को इक गीत बनाएँ
आँखों में सपने बसाएँ ।
उड़ने को आकाश दिलाएँ
सरगम से मोती बिखराएँ ।

32. मेहनत

मेहनत से मिले संसार ।
इसकी माया अपरंपार ॥
सुखमय जीवन का आधार ।
रहे न तन में एक विकार ॥

मेहनत से जो रहता दूर ।
कैसे पाए फल अंगूर ॥

बिन मेहनत न दिखे बहार ।
जीवन हो सूना संसार ॥

मेहनत से न होती हार ।
हर मुश्किल कर जाते पार ॥
मेहनत से मिलता उत्थान ।
जीवन बन जाता वरदान ॥

मेहनत से हो स्वस्थ शरीर ।
तन से पौरुष, मन से वीर ॥
मेहनत हो अपना ईमान ।
सत्कर्मों से बनें महान ॥

मेहनत से होता हर काम ।
कितना ही दुष्कर हो धाम ॥
पर्वत को भी देते फोड़ ।
धार नदी की देते मोड़ ॥

मेहनत से बन जाते भाग ।
जीवन में भर जाते राग ॥
जीवन उनका बनता गीत ।
करते जो मेहनत से प्रीत ॥

33. देश हमारा

गाएँगे हम गाएँगे !
गीत देश के गाएँगे !!

इसकी माटी तिलक हमारा,
देवलोक सा भारत प्यारा,
कण-कण जिसका लगता प्यारा,
नही किसी से जग में हारा,

जग में मान बढ़ाएँगे !
गीत देश के गाएँगे !!

बहे प्रीत की अविरल धारा,
भक्ति से संसार संवारा,
मानवता का बना सहारा,
तीन लोक में सबसे न्यारा,

दिल में सदा बसाएँगे !
गीत देश के गाएँगे !!

आँख उठा कर जिसने देखा,
यँ फिर छेड़ी सीमा रेखा,
नही करेंगे अब अनदेखा,
पूरा कर देंगे हम लेखा,

घर घर खुशियाँ लाएँगे !
गीत देश के गाएँगे !!

34. युद्ध धर्म
शत्रु सीमा पर खड़ा ललकारता
तू हाथ बाँध ईश को पुकारता ।

वीरता की यह नही पहचान है
हटना युद्ध धर्म से अपमान है ।

त्याग, तप, जप का यहाँ क्या काम है
संहार - शत्रु वीरों की शान है ।
लावा जो हृदय में है दहक रहा
बहने दो ज्वालामुखी भभक रहा ।

बिगुल नही तुमने बजाया, सच है
समर कब तुमने था चाहा, सच है ।
तू हाथ जोड़ अब दिखा न दीनता
इस समर को जीतना ही वीरता ।

अर्थ, स्वार्थ, काम जहां अविराम है,
संघर्ष कुलिष ही वहां परिणाम है ।
उठती हैं जब रण में चिनगारियाँ
याद करो अपनी तुम सरदारियाँ ।

निरीह बन गीत विनय के गा नही
सरल, सरस, अनुनय अब अपना नही ।
हाथ ले अंगार चल अब उस दिशा
प्राण मोह त्याग, मिटा काली निशा ।

अग्नि सी धधक, उबाल रख रक्त में
शत्रु दमन कर उसे गिरा गर्त में ।
वीर बन शक्ति रख, हो सदा विजयी
आग बन राख कर, हो सदा विजयी ।

35. देवों का वरदान

देवों का है यह वरदान ।
प्यारा अपना हिंदुस्तान ।

है अनमोल हमारा देश ।
सिमटे हैं कितने परिवेश ।

नित नया कर प्रकृति शृंगार ।
दिखलाती है रूप हजार ।

पावन धरती स्वर्ग समान ।
जन्म यहीं लूँ, है अरमान ।

ऋषि मुनि संतों का है वास ।
देवि देवता का आभास ।

खोजें फैला ज्ञान अथाह ।
चलते रहें प्रगति की राह ।

सदविचार का करें प्रसार ।
दूर रहे अहं विकार ।

वीरों की है भूमि महान ।
भाषा, संस्कृति, गुरु सम्मान ।

सत्य अहिंसा बहती धार ।
मानवता के गुणी अपार ।

गौरवमय अपना इतिहास ।
अर्व अनेक भरें उल्लास ।

हम खुद हैं अपनी पहचान ।
जय जय जय हो हिंदुस्तान ।

36. हिंद - देश

दुनिया में है सबसे प्यारा ।
हिंद देश है सबसे न्यारा ॥

धरती पर है देश निराला,
जग को राह दिखाने वाला,
कोटि नमन करते इस भू को
ले गोदी सबको है पाला ,

योग अहिंसा, ज्ञान, ध्यान की
बहती पावन निर्मल धारा ।
हिंद देश है सबसे न्यारा ॥

भांत भांत के फूल खिले हैं,
इस धरती के रंग में ढ़ले हैं,
गोरे, काले यां हों श्यामल
दिल के लगते सभी भले हैं,

जप तप पूजा धर्म न्याय की
दिलों में बहती अमृत धारा ।

हिंद देश है सबसे न्यारा ॥

मिलन अनोखा संस्कृति का है,
भाषा, वाणी, बोली का है,
सबको दिल में बसाता देश
ऋषियों, मुनियों, वेदों का है,

सत्कर्मों से, सदभावों से,
मानवता का बना सहारा ।
हिंद देश है सबसे न्यारा ॥

देवों की है महिमा गाता,
हर जन मंदिर मस्जिद जाता,
इस धर्म धरा पर कर्मों से
पुण्य प्रगति की अलख जगाता,

पर्वत, नदियों घाटी ने मिल,
इस भू को है खूब संवारा ।
हिंद देश है सबसे न्यारा ॥

37. नेक बनें इंसान
इक दूजे से प्यार ।
कभी न हो तकरार ।

ले हाथों में हाथ ।
कदम बढें इक साथ ।

इक आंगन के फूल ।
करें न कोई भूल ।

कभी न दो संताप ।
बढ़ता खूब प्रताप ।

पथ प्रगति हो धाम ।
करें देश का नाम ।

रखें सद्व्यवहार ।
अपना हो संसार ।

दूर रहे अभिमान ।
करें बड़ों का मान ।

सीख ज्ञान विज्ञान ।
कर्म करें महान ।

सत्य न्याय की धार ।
यही बनें हथियार ।

देश भक्ति हो राह ।
मर मिटने की चाह ।

ईश्वर दो वरदान ।
नेक बनें इंसान ।

38. वीर जवान

हम हैं देश के वीर जवान,
भारत माँ पर हों बलिदान ।
हो ऐसा सौभाग्य हमारा,
ईश्वर हमको दो वरदान ।।

अड़े रहें हम, डटे रहें हम,
दुश्मन हो टकराकर चूर ।
देख हमारी हिम्मत साहस,
रहे काल भी हमसे दूर ।।

देशवासियों की सेवा में,
तत्पर हों हम वीर जवान ।
हो ऐसा सौभाग्य हमारा,
ईश्वर हमको दो वरदान ॥

हम हैं नन्हे वीर सिपाही,
धुन के पक्के, दिल मजबूत ।
जो भी आये राह हमारी,
पहुंचे वह सीधा ताबूत ॥

तन मन धन सब देश निछावर
मत डोले अपना ईमान ।
हो ऐसा सौभाग्य हमारा
ईश्वर हमको दो वरदान ॥

गीत विजय के हर पल गायें,
भारत माँ पर है अभिमान ।
मर मिटे जो देश की खातिर
युग युग तक करते सम्मान ॥

मतवाले हम वीर निराले,
अर्पित हों भारत पर प्रान ।
हो ऐसा सौभाग्य हमारा
ईश्वर हमको दो वरदान ॥

39. इस्मित

स्टार अमूल आवाज बनी
इस्मित की पहचान बनी ।
हवा में घुल गये उसके सुर
घर घर बस गये उसके सुर ।

मोह लिया मन उसने सबका
मधुर मृदुल था कण्ठ उसका ।
अदा निराली उसकी थी
सादगी कितनी महकी थी ।

जग में बसा हुआ है भारत
देश देश में रहता भारत ।
बन आवाज सुरीली पहुंचा
देश देश में इस्मित पहुंचा ।

जग विस्मित था सुन दुर्घटना
कैसी थी अनहोनी घटना ।
सबके दिल में उपजी पीर
सबके नयनों में था नीर ।

मरा नही वह अमर बना है
रब के घर संगीत बना है ।
ध्रुव जैसा वह चमक रहा है
तारा बन कर दमक रहा है ।

याद संजोकर उसकी दिल में
आये हैं 'लिटिल चैंप्स' कितने ।
नाम रोशन कर जाएंगे
आवाज देश की बन जायेंगे ।

40. दुनिया खूब है भाती

जब भी देखूँ मै दुनिया, यह दुनिया खूब है भाती ।
मन में मेरे प्यार जगाती, दुनिया खूब है भाती ॥

हंस हंस कर जब खिले फूल मुझे अपने पास बुलाते ।
कोमल सा अहसास दिलाती, दुनिया खूब है भाती ॥

सुबह सवेरे आसमान में दिखता लाल सा गोला |
मन में फिर विश्वास जगाती दुनिया खूब है भाती ॥

ऋतुएं नियम से आती जातीं, खुशियां देकर जातीं ।
खुशियां बांटो जीना सीखो, दुनिया खूब है भाती ॥

प्रकृति सदा देती है हमको, जीवन के साधन सभी ।
देना हर पल हमें सिखाती, दुनिया खूब है भाती ॥

कुहुक कुहुक कर मीठी बोली, बोल के कोयल मोहे ।
बोलो मीठे बोल सुनाती दुनिया खूब है भाती ॥

घट कर चंदा गायब होता, फिर बढ़ कर होता बड़ा ।
न घबराना दुख में बताती, दुनिया खूब है भाती ॥

टिम टिम करते लाखों तारे चमक रहे जुगनू गगन ।
जग आलोक बिखेरो कहती दुनिया खूब है भाती ॥

सांझ सवेरे चहक चहक कर चिड़ियां खूब हैं गातीं ।
हंसो हंसाओ जग में हर पल, दुनिया खूब है भाती ॥

फल से जितना लद जाता, उतना ही झुक जाता पेड़ ।
मधुर मृदुल हम भी बन जाएं, दुनिया खूब है भाती ॥

तरह तरह के प्राणी, पक्षी, जीव, जंतु और जलचर ।
कण-कण में है बसा हुआ प्रभु, दुनिया खूब है भाती ॥

41. राज दुलारे

राज दुलारे जग के प्यारे ।
हंसते और हंसाते न्यारे ॥

किलकारी से जब घर चहके,
हंसी खुशी से तब घर महके,
देख देख उनको दिल बहके,
मुसकाते जब वह रह रह के,

कोमल फूलों से हैं प्यारे ।
हंसते और हंसाते न्यारे ॥

भोली सूरत जब दिखलाते,
सबके मन में बस हैं जाते,
प्यार से जो भी पास आते,
इनके ही बन कर रह जाते,

हर बुराई से दूर प्यारे ।
हंसते और हंसाते न्यारे ॥

जब यह अपनी हठ दिखलाते,
बड़े बड़े भी झुक हैं जाते,
लड़ना भिड़ना सब कर जाते,
भूल पलों में लेकिन जाते,

सच्चा प्रेम जगाते प्यारे ।
हंसते और हंसाते न्यारे ॥

धार प्रेम की यह बरसाते,
घर घर में खुशहाली लाते,

भगवन इनके दिल बस जाते,
पावन निर्मल प्यार जगाते,

सब के मन को भाते प्यारे ।
हंसते और हंसाते न्यारे ॥

42. बच्चों की दुनिया
बच्चों की है दुनिया प्यारी
लगता ज्यों फूलों की क्यारी
रंग रंग के फूल खिले हैं
महके यह बगिया फुलवारी ।

गूंज उठे जब घर किलकारी
सद के जाए माँ बलिहारी
भोली सूरत मोहित करते
वारी जाए दुनिया सारी ।

लड़ना, भिड़ना और झगड़ना
लेकिन फिर से घुल मिल रहना
पल भर में सब भूल भुला कर
मिलजुल कर फिर संग खेलना ।

पल में रूठें, पल में मानें
नहीं किसी को दुश्मन जानें
अजनबी हो कोई भले ही
खेल - खेल में अपना मानें ।

कोमल मन है, निर्मल बातें
हृदय खोल अपना दिखलाते
संग बिता कर कुछ पल देखो
प्रभु के दर्शन हम पा जाते ।

43. बच्चे

बच्चे अच्छे
बच्चे सच्चे
बच्चे मनके
प्यार सबसे करते ।

कपट न जानें
बैर न जानें
द्वेष न जानें
हठ भले ही करते ।

सत्य धर्म है
सत्य कर्म है
सत्य मर्म है
झूठ कभी न कहते ।

निर्मल मन है
पावन मन है
उज्ज्वल मन है
अहं कभी न रखते ।

दूर बुराई
सब चतुराई
सब हैं भाई
दोस्त सब को कहते ।

भोली सूरत
भोली सीरत
नटकट आदत
तंग सबको करते ।

44. वरदान दो

माँ मुझे वरदान दो,
गीत सुर का ज्ञान दो ।
विश्व में सम्मान दो,
माँ मुझे वरदान दो ।

मधुर हो वाणी सदा,
कटु वचन न कहें कदा ।
राष्ट्र निज अभिमान दो,
माँ मुझे वरदान दो ।

सत्य पथ अरमान हो,
पाप से अनजान हों ।
पुण्य प्रेम संज्ञान दो,
माँ मुझे वरदान दो ।

ज्योति बन पथ पर जलें,
मार्ग परहित पर चलें ।
सृजन शक्ति महान दो,
माँ मुझे वरदान दो ।

माँ पिता पग स्वर्ग हो,
उनकी सेवा धर्म हो ।
साहस शौर्य मान दो
माँ मुझे वरदान दो ।

45. वृक्ष

पल पल बढ़ा प्रदूषण जाता,
प्राण वायु में घुलता जाता,
वृक्षों को है काटा जाता,
जंगल को सिमटाया जाता ।

जीवन यापन जिससे पाते,
नष्ट उसी को हम कर जाते,
नियम प्रकृति के हमें न भाते,
उपकार इनका भूल जाते ।

विष पीकर यह हमें बचाते,
दे अमृत सदा प्राण बचाते,
परहित धर्म प्रतिपल निभाते,
फल, फूल, छांव सब हैं पाते ।

धरती का श्रृंगार तुम्ही हो,
जीवन का आधार तुम्ही हो,
विहगों का संसार तुम्ही हो,
बच्चों का आकाश तुम्ही हो ।

प्राणी को वरदान तुम्ही हो,
राही को आराम तुम्ही हो,
औषधि का आयाम तुम्ही हो,
दानियों में महान तुम्ही हो ।

आओ मिल सब पेड़ उगाएँ,
इस धरती पर स्वर्ग बसाएँ,
हरा भरा हम देश बनाएँ,
जग में फिर खुशियां बिखराएँ ।

46. पुकार
सहिष्णुता की वह धार बनो
पाषाण हृदय पिघला दे ।
पावन गंगा बन धार बहो
मन निर्मल उज्ज्वल कर दे ।

कर्मभूमि की वह आग बनो
चट्टानों को वाष्प बना दे ।
धरती सा तुम धैर्य धरो
शोणित दीनों को प्रश्रय दे ।

ऊर्जित अपार सूर्य सा दमको
जग में जगमग ज्योति जला दे ।
पावक बन ज्वाला सा दहको
कर दमन दाह कंचन निखरा दे ।

अति तीक्ष्ण धार तलवार बनो
भूपों को भयकंपित रख दे ।
पीर फकीरों की दुआ बनों
हर दरिद्र का दर्द मिटा दे ।

शौर्य पौरुष सा दिखला दो
दमन दबी कराह मिटा दे ।
अंबर में खीचित तड़ित बनो
जला जुल्मी को राख कर दे ।

सिंहों सी गूंज दहाड़ बनो
अन्याय धरा पर होने न दे ।
बन रुधिर शिरा मृत्युंजय बहो
अन्याय धरा पर होने न दे ।

अपमान गरल प्रतिकार करो
आर्तनाद कहीं होने न दे ।
बन प्रलय स्वर हुंकार भरो
शासक को शासन सिखला दे ।

पद दलितों की आवाज बनो
मूकों का चिर मौन मिटा दे ।
कर असि धर विषधर नाश करो
सत्य न्याय सर्वत्र समा दे ।

सृष्टि सृजन का साध्य बनो
विहगों को आकाश दिला दे ।
बन शीतल मलय बहार बहो
हर जीवन को सुरभित कर दे ।

47. होते वीर अमर

जब से हमने ठान लिया है,
सबने हमको मान लिया है,
भारत माँ की रक्षा को हम
सदा रहें तत्पर ।
होते वीर अमर ॥

नन्हे बालक हम दिखते हैं,
लेकिन साहस हम रखते हैं,
कोई टिके न, जब चलते हम
वीरता की डगर ।
होते वीर अमर ॥

भले देश पर मर मिट जाएँ,
सीने पर ही गोली खाएँ,

दुश्मन भले ही सामने हो
चलते रहें निडर ।
होते वीर अमर ॥

देश भक्ति है अपना नारा,
जिसने भी हमको ललकारा,
उसको धूल चटा देंगे हम
एक एक गिनकर ।
होते वीर अमर ॥

तूफानों में हम घिर जाएँ,
काल प्रलय बन आ जाए,
मिट जाए हमसे टकरा कर
खड़े रहें डटकर ।
होते वीर अमर ॥

48. प्रतिज्ञा

तीन रंग का अपना झंडा
सबसे ऊँचा फहराएँगे,
हो भारत जग में अग्रिम सदा
कर्म देश हित कर जाएँगे ।

भेदभाव से दूर रहें हम
विश्व बंधु का अपना नारा,
प्रेम जगाएँ हर मानस में
बन फूल खिले हर जन प्यारा ।

हर विपदा से लोहा लेकर
हर बाधा को पार करेंगे,
घर घर में हम दीप जलाकर
अंधकार को दूर करेंगे ।

सत्कर्मों के पुष्प खिलाकर
सुमन सुरभि हम बिखराएँगे,
देशभक्ति के सच्चे राही
नाम देश का कर जाएँगे ।

निज गौरव, निज मान हेतु हम
जान निछावर कर जाएँगे,
स्वाभिमान के धनी बहुत हैं
देश हेतु खुद मिट जाएँगे ।

ज्ञान, विज्ञान नया सीखकर
कीर्ति ध्वजा हम फहराएँगे,
उजियारा हर जीवन फैले
ज्ञान ज्योति से भर जाएँगे ।

प्रगति पथ विश्वास से बढ़कर
हर क्षेत्र क्रांति कर जाएँगे,
खुशियां हर जीवन में छाएँ
कर्म देश हित कर जाएँगे ।

49. वृक्ष - ईश

विष पी शिव ने जहाँ बचाया,
धर कण्ठ मृत्यु को भरमाया,
जग ने उनका मान बढ़ाया,
ईश बना कर हृदय बसाया ।

विष्णु मोहिनी रूप बनाया,
देवों को अमरित पिलवाया,
मोहित दैत्यों को भरमाया,
जगत ईश का दर्जा पाया ।

देवों से बढ़ वृक्ष हमारे,
विष इस जग का पीते सारे,
विष पी बनाते अमृत न्यारे,
जीवन यापन बने सहारे ।

वृक्ष हमारे जीवन दाता,
इनसे अपना गहरा नाता,
सुखी बनाते बनकर भ्राता,
जग उपकार बहुत से पाता ।

आओ वसुधा वृक्ष लगाएं,
वृक्ष लागा कर धरा सजाएं,
देव ईश सा मान दिलाएं,
जीवन अपना स्वर्ग बनाएं ।

50. राष्ट्र प्रहरी

राष्ट्र के प्रहरी सजग
सतत सीमा पर सजग
हाथ में हथियार है
वार को तैयार है ।

शत्रु पर आँखें टिकी
सांस आहट पर रुकी
सीमा न लांघ पाये
दुश्मन न भाग पाये ।

ठंड हो कितनी कड़क
झुलसती गरमी भड़क
परवाह न तूफान की
गोलियों से जान की ।

जान लेकर हाथ पर
खड़ा सीमा हर पहर
वीर बन पहरा सतत
राष्ट्र की रक्षा निरत ।

बस यही अरमान है
वार देनी जान है
चोट इक आये नही
आन अब जाये नही ।

बाढ़ हो तूफान हो
आपदा अनजान हो
वीर है तत्पर सदा
निसार जान को सदा ।

51. मानव

अजब शक्ति मानव ने पायी,
भू पर अपनी धाक जमायी ।
जब जी चाहे व्योम विचरता,
जल को बाँध, बाँध में रखता ।

नित्य नए प्रयोग यह करता,
चाँद पे जाकर पैर रखता ।
यान ग्रहों पर अपने भेजे,
छुपे रहस्य सृष्टि के खोजे ।

विपदा कोई न राह रोके,
संकट कोई न चाह रोके ।
उद्यम से शूल मिटाता है,
प्रस्तर को भी पिघलाता है ।

पर्वत पर धाक जमाता है,
धरा में खान बनाता है ।
मंथन कर सागर का सीना,
खनिज तेल पा जीवन जीना ।

विघ्न भले ही कितने आएँ,
काँटे राहों में बिछ जाएँ ।
विचलित होता कभी नही यह,
धीरज खोता कभी नही यह ।

धरती को सिमटाया इसने,
घर घर में पहुंचाया इसने ।
प्रखर बुद्धि मानव ने पायी
अजब शक्ति मानव ने पायी ।

52. जीवन का है खेल निराला

जीवन का है खेल निराला
तुम देखो और मैं देखूँ,
जैसे बुना मकड़ी का जाला
तुम देखो और मैं देखूँ ।

रंग बिरंगे लोग हैं जैसे
रंग बिरंगे फूल सभी,
खुशबू न देखे गोरा काला
तुम देखो और मैं देखूँ ।

कान्हा का जब नाम मिला तो
मीठे बन गये कड़वे बोल,
जहां बना अमृत का प्याला
तुम देखो और मैं देखूँ,

यां जाने यह माता यशोदा
यां जाने यह नंद बाबा,
दोनों ने कैसे कान्हा पाला
तुम देखो और मैं देखूँ ।

53. बरखा ऋतु

नन्ही नन्ही बूँदें लेकर
बरखा ऋतु है आयी ।
उमंग जगाती हर्ष देती
सबके मन को भायी ।

पहली बूँदें जब गिरती हैं
सोंधी गंध भर जाए ।
आनंदमग्न हो जीव जंतु
मनुज धरा खिल जाए ।

गर्मी से छुटकारा पाया
लू को मार भगाया ।
नभ में छायी घटा घनघोर
उल्लास हृदय छाया ।

जग में छायी फिर हरयाली
झूमें नाचें गाएँ ।
नदी ताल सब भरे लबालब
पेड़ लता लहराएँ ।

बच्चे जल में नाच रहे हैं
मेघ गगन हैं छाये ।
इंद्रधनुष का दृष्य मनोरम
नृत्य मोर मन भाये ।

गर्जन जब करती है बिजली
धैर्यवान घबराये ।
काली घटा छाये रात में
अंधकार गहराये ।

वर्षा ऋतु से महके जीवन
खेती भी लहराये ।
अनुप्राणित हो जीवन जागे
प्रकृति सौंदर्य छाये ।

जन्म अष्टमी, रक्षा बंधन
बरखा ऋतु में आयें ।
पींग बढ़ा कर झूला झूलें
मिलकर गाना गायें ।

54. डा. जगदीश चंद्र बसु

तीस नवंबर सन अठावन
ढ़ाका जिले का गांव मेमन ।
एक सौ पचास बीते वर्ष
बसु परिवार में फैला हर्ष ।

बालक जन्मा था मेधावी
था महान वैज्ञानिक भावी ।
जगदीश चंद्र का नाम मिला
ग्राम पाठशाला फूल खिला ।

किसान, मछेरे दोस्त बनते
पेड़ पौधों की बात करते ।
कोलकता का सेंट जेवियर
कालेज में विज्ञान कैरियर ।

उच्च शिक्षा विज्ञान पायी
नई खोजों में रुचि बनायी ।
पूरी कर पढ़ाई इंग्लैंड
वह लौटे अपनी मदरलैंड ।

नियत हुए प्रोफेसर पद पर
प्रेसीडेंसी कालेज चुनकर ।
अंग्रेजों का देश में राज
नियम उन्ही के उनके नाज ।

अंग्रजों से आधा वेतन
ठान लिया मैं क्यों लूँ वेतन ।
स्वाभिमान के धनी बहुत थे
अपनी जिद पर अड़े रहे थे ।

तीन वर्ष तक लिया न वेतन
कठिनाई से बीता जीवन ।
झुकना पड़ा कालेज को तब
बसु ने पाया मान सहित सब ।

प्रथम विज्ञान यंत्र बनाया
गवर्नर को प्रयोग दिखाया ।
'रेडियो वेव' पार कराई
दूर रखी घंटी बजाई ।

विज्ञान बना उनका जीवन
मार्ग कर्म, धैर्य, साहस लगन ।
धातुओं पर की कई खोजें
पेड़ पौधों में प्राण खोजे ।

पौधों में विद्युत प्रवाह कर
कंपन, कष्ट, मृत्यु अंकित कर ।
हुए अचंभित सभी देखकर
बसु बने 'पूर्व के जादूगर' ।

वैज्ञानिक पहला भारत का
गूंजा विश्व में नाम उसका ।
बसु विज्ञान मंदिर बनाया
भाषा सरल ज्ञान फैलाया ।

55. कान्हा बना दे !

माँ मुझको कान्हा बना दे,
गोरी सी राधा दिला दे ।
बाँसुरी मुझको सिखला दे
तीर यमुना का दिखला दे ।

लुक छुप मैं बाग में खेलूँ,
गोपियों संग रास छेड़ूँ ।
बारंबार उन्हे सताऊँ,
छेड़ उनको मैं छुप जाऊँ ।

वह शिकायत करने आएँ,
पूछने तू मुझसे आए ।
देखता जब तुमको आता,
पेड़ पर चढ़ मैं छुप जाता ।

मुझे पास न जब तुम पाती,
सोच कर कुछ घबरा जाती ।
मुझे डांटना भूल जाती,
दे आवाज मुझे बुलाती ।

हंस हंस जब मैं पास आता,
विकल हृदय सहज हो जाता ।
प्यार से तू पास बुलाती,
गले लगा सब भूल जाती ।

माखन मिसरी फिर मंगाती,
गोद में ले मुझे खिलाती ।
गोपियां जब याद दिलाती,
उन्हें डांटकर तुम भगाती ।

अपने प्यार का सदका दे,
काजल का टीका लगा दे ।
माँ मुझको कान्हा बना दे,
अपने आँचल में छिपा दे ।

56. प्रकृति

प्रकृति हमारी माता है
जीवन का इससे नाता है
प्राणों की यह दाता है ।

प्रकृति हमारा पोषण करती
प्रकृति हमारी रक्षा करती
प्रकृति हमे है सब कुछ देती ।

तरह तरह के रंग दिखाती
उषा किरण जादू बिखराती
इंद्रधनुषी आभा सुहाती ।

नित नया है दृष्य सुहाना
ऋतुओं का है आना जाना
रूप प्रकृति के मन को भाना ।

जेठ दोपहरी गरम पसीना,
पूष रात्रि में बदन कांपना
बरखा में बूंदों का गिरना ।

ऋतु बसंत में ठूंठ भी फलना
फल फूल से कुंज महकना
प्रकृति के हैं अनमोल गहना ।

नदियां करतीं कल कल नाद
झरनों से झरता निनाद
पक्षियों का कलरव उन्माद ।

हवा सुनाती सुमधुर गीत
टहनी पत्तों से मधुर प्रीत
बहता सन सन लय संगीत ।

स्वार्थ हेतु कर प्रकृति विनाश
प्रदूषित कर जल वायु आकाश
देते माता को हम त्रास ।

वन जीवों का कर विलोप
प्रकृति का हम सह रहे कोप
बाढ़ सूखे का विकराल प्रकोप ।

आज प्रकृति है पुकार रही
संरक्षण है मांग रही
संवर्धन है मांग रही ।

57. अभिलाषा

बन दीपक मैं ज्योति जगाऊँ
अंधेरों को दूर भगाऊँ,
दे दो दाता मुझको शक्ति
शैतानों को मार गिराऊँ ।

बन पराग कण फूल खिलाऊँ
सबके जीवन को महकाऊँ,
दे दो दाता मुझको भक्ति
तेरे नाम का रस बरसाऊँ ।

बन मुस्कान हंसी सजाऊँ
सबके अधरों पर बस जाऊँ,
दे दो दाता मुझको करुणा
पाषाण हृदय मैं पिघलाऊँ ।

बन कंपन मैं उर धड़काऊँ
जीवन सबका मधुर बनाऊँ,
दे दो दाता मुझको प्रीति
जग में अपनापन बिखराऊँ ।

बन चेतन मैं जड़ता मिटाऊँ
मानव मन मैं मृदुल बनाऊँ,
दे दो दाता मुझको दीप्ति
जगमग जगमग जग हर्षाऊँ ।

58. अगड़म बगड़म

अगड़म बगड़म जय बम बोला,
तेरे सर पे गरी का गोला,
बनिये ने जब आटा तोला,
हाथी ने तब बटुआ खोला ।

काली बिल्ली, लंगड़ा शेर,
काना बंदर खाए बेर,
खरगोश बना बड़ा दिलेर,
कहता मैं हूँ सवा सेर ।

कुत्ता भौंचक दुम हिलाए,
कौआ बैठा रोटी खाए,
लोमड़ जोर से गाना गाए,
गाना गाकर मुझे रुलाए ।

कनखजूरा उसको काट खाए,
दुनिया को जो रंग दिखाए,
मेढ़क टर्र टर्र हार्न बजाए,
गली गली में शोर मचाए।

59. गीत - आओ दीप जलाएँ

आओ खुशी बिखराएँ छाया जहां गम है ।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

एक किरण भी ज्योति की
आशा जगाती मन में;
एक हाथ भी कांधे पर
पुलक जगाती तन में;

आओ तान छेड़ें, खोया जहाँ सरगम है।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

एक मुस्कान भी निश्छल
जीवन को देती संबल;
प्रभु पाने की चाहत
निर्बल में भर देती बल;

आओ हंसी बसाएँ, हुई आँखे जहां नम हैं।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

स्नेह मिले जो अपनो का
जीवन बन जाता गीत;
प्यार से मीठी बोली
दुश्मन को बना दे मीत;

निर्भय करें जीवन जहाँ मनु गया सहम है।
आओ दीप जलाएँ गहराया जहाँ तम है ॥

60. आओ बनाएं दुनिया सुंदर

आओ बनाएं दुनिया सुंदर
सबको दें खुशहाली,
जीवन सबका बगिया सा हो
महके ज्यों फुलवारी ।

आओ बसाएं स्वर्ग धरा पर
उपवन बन जग चहके,
मिलकर झूमें नाचे गाएं
सारी धरती बहके ।

आओ उगाएं सूर्य धरा पर
जीवन सबका चमके,
उजियारा पहुंचे हर घर में
किरणों से घर दमके ।

आओ मिटाएं बैर भाव सब
दुश्मन रहे न कोई,
मीत बने जग अपना सारा
आँसू बहे न कोई ।

61. लुका छिपी

सबसे प्यारा
जग में न्यारा
खेल हमारा
लुका छिपी ।

आँख मिचौली
गिनती बोली
आँखे खोली
लुका छिपी ।

घर में ढूंढा
बाहर ढूंढा
गली में ढूंढा
लुका छिपी ।

इसको खोजा
उसको खोजा
धप्पा खाया
लुका छिपी ।

फेल हुआ फिर
आँख बंद कर
गिनती गिन फिर
लुका छिपी ।

सौ तक गिना
देखे बिना
छुपी सेना
लुका छिपी ।

खोजा सबको
इसको उसको
सब सेना को
लुका छिपी ।

खोजा किसको
पहले जिसको
बारी उसको
लुका छिपी ।

62. पापा किचन में

पापा ने खाना बनाया
किचन को पूरा बिखराया
दाल को थोड़ा जलाया
तेल का तड़का लगाया ।

फुलके का आकार निराला
कहीं से कच्चा कहीं से काला
धुंआ घर भर में भर डाला
कुकर में दूधा उबाला ।

सब्जी का था बुरा हाल
नीचे काली ऊपर लाल
पापा की हालत बेहाल
माथे पर था एक सवाल ।

हंसी देखकर हमको आई
लेकिन चुपके से दबाई
पापा ने फटकार लगाई
खिसकने में थी भलाई ।

पापा को फोन पकड़ाया
होटल का नंबर घुमाया
खाने का आर्डर दिलवाया
मजे से हम सबने खाया ।

63. सती - शिव
शिव को योग्य अपने दक्ष न थे मानते,
ब्याल, भभूत से लिपटे गवार जानते,
सती - महेश्वर का परिणय न थे चाहते,
अपमानित करने का अवसर न चूकते ।

किंतु बसा शिव हृदय, बलिहारी थी सती,
मोहित बेसुध सदा इठलाती थी सती,
अपलक नयनों से छवि निरखती थी सती,
मिला पति महादेव प्रण कर खुश थी सती ।

दक्ष राजा ने यज्ञ का आयोजन किया,
न्योता सभी देवों, ऋषि, मुनियों को दिया,
प्रजापति, विष्णु को विशिष्ट सम्मान दिया,
पुत्री सती, दामाद शिव को न याद किया ।

सती को ज्ञात हुआ, हवन रखा पिता ने,
आग्रह किया पति से चलने का हवन में,
जग रीत बता कर समझाया शंकर ने,
'बिना बुलाए मान नही', कहा नाथ ने ।

सती ने नाथ से प्यार से फिर हठ किया,
शिव तो अटल थे, सती को भी मना किया,
सती पर मानी नही, जिद कर ठान लिया,
पहुँची महल पिता के, घर निज मान लिया !

पहुँच कर हवन में सभी को प्रणाम किया,
तात से फिर जी भर सती ने गिला किया,
निमंत्रण न भेजने का उलाहना दिया,
हवन में शंभू को क्यों नही याद किया ?

महलों के अयोग्य दक्ष ने करार दिया,
अपशब्द कहे शंकर का अपमान किया,
भूतों का नाथ कह शिव तिरस्कार किया,
मूरत बना शिव की द्वार पर खड़ा किया ।

स्तब्ध सती देख कर नाथ का अपमान,
निज नाथ आए याद फिर दिया था ज्ञान,
न जाना बिन बुलाए मिलता नही मान,
बिखर गई टूट ! पराई हुई संतान ?

सह सकी सती नही भोले का अपमान,
प्रण किया त्याग दूंगी शरीर ससम्मान,
जाऊँगी वापिस, लेकर नही अपमान,
भरी सभा किया फिर अग्नि देव आह्वान ।

राख हुई जल सती छोड़ा यह संसार,
सुनकर घटना हुए, क्रुद्ध सती भरतार,
आ पँहुचे महेश फिर दक्ष के दरबार,
ताण्डव किया वहाँ, मच गई हा-हा-कार ।

नष्ट हुआ समूल, दक्ष को किया तमाम,
ऋषि, मुनि, देव गण करते सभी त्राहिमाम,
ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, सहमें सोच परिणाम,
अनुनय कर शांत किया, शिव पहुँचे स्वधाम ।

64. अकड़ू - बकड़ू - बमबोले

अकड़ू - बकड़ू - बमबोले
थोडे बौडम, थोडे भोले
थोडे कड़क, थोडे पोले
लेकर चलते अपने झोले ।

तीनों रहते साथ साथ
जाडा गरमी हो बरसात
झगडा हो भले दिन रात
चोली दामन जैसा साथ ।

मेला पिकनिक यां सिनेमा
सैर सपाटा हो या ड्रामा
खरीदना हो पैंट पजामा
सदा संग लो चाहे आजमा ।

गांव से जब जी उकताया
शहर घूमने का मन आया
तीनों ने इक प्लान बनाया
अपने अपने घर बतलाया ।

शहर में पहुंचे ले सामान
ढूंढ लिया फिर एक मकान
लेकिन हुआ गलती का भान
पैसे का था न नामोनिशान ।

सिर मुड़ाते पड़ गए ओले
उल्टे पैर गांव को लौटे
अकड़ू - बकड़ू - बमबोले
थोडे बौडम, थोडे भोले ।

65. हिम्मत

विपदाएं हों कितनी ही
हिम्मत कभी न हारो तुम,
जीवन से गर हार गए हो
हार को बदलो जीत में तुम ।

खो गया विश्वास तुम्हारा
दिखता तुमको बस अंधियारा,
पास नही है कोई सहारा
फिर भी सच पर चलना यारा ।

आरोप लगें तुम पर झूठे
नफरत के बीज भी रोपें,
चलना अडिग तुम अपनी राह
भले पीठ पर छुरे घोपें ।

करे न कोई तुम पर विश्वास
छोड़ न देना अपनी आस,
जीत दिलाएगा तुमको
इक दिन तुम्हारा सतत प्रयास ।

66. फल
सेब संतरा और मौसंबी
खाए हमने खूब

अब मौसम है आमों का
खरबूजे और तरबूज

रस रसीली लीची भी
आएगी भरपूर
छुट्टी में अब होगी मस्ती
पढ़ना कोसों दूर

लुकाट चीकू रसभरी
आते नही पसंद
लेकिन पापा घुरे जब
चुपके से निगले हम

अगूर चेरी स्ट्राबेरी
मुह से टपके लार
इनको जब भी खाए हम
बनते सबके यार

67. सृष्टि
सूरज दहके
चंदा चमके
ज्योति दमके
दीपक बन के ।

लोक है प्यारा
शीतल धारा

गगन है न्यारा
दूर सितारा ।

ठंडी आये
स्वेटर लाये
नहीं नहायें
मस्ती छाये ।

गर्मी सताए
खूब रुलाए
खेल न पाएँ
कैद हो जाएँ ।

बादल छाये
बारिस आये
रिमझिम गाये
गर्मी जाये ।

सावन महका
मौसम बहका
गुलशन महका
जीवन चहका ।

निंदिया भाये
सपने लाये
परियां आयें
कथा सुनाएँ ।

68. जय हो ! भारत माँ की जय हो !

मुकुट शीश उन्नत शिखर
पदतल गहरा विस्तृत सागर
शोभित करती सरिताएं हों
जय हो ! भारत माँ की जय हो !

सत्य, अहिंसा, त्याग भावना
सर्वमंगल कल्याण प्रार्थना
जन -जन हृदय महक रहा हो
जय हो ! भारत माँ की जय हो !

पुरा संस्कृति उत्थान यहीं पर
धर्म अनेक उद्गम यहीं पर
पर उपकार सार निहित हो
जय हो ! भारत माँ की जय हो !

विद्वानो, वीरों की पुण्य धरा
बलिदानों से इतिहास भरा
तिलक रक्त मस्तक धरा हो
जय हो ! भारत माँ की जय हो !

साहित्य, खगोल, आयुर्विज्ञान
योग, अध्यात्म, अद्वैत, ज्ञान
ज्ञानी, दृष्टा, ऋषि, गुणी हों
जय हो ! भारत माँ की जय हो !

राष्ट्र उत्थान भाव निहित हो
धर्म दया से अनुप्राणित हो
जग में भारत विस्तारित हो
जय हो ! भारत माँ की जय हो !

69. तितली परी

परी मै नन्ही उड़ती हूँ
बादल संग मै तिरती हूँ
पल में यहाँ पल में वहाँ
हवा से बाते करती हूँ ।

दूर सितारों में घर मेरा
परियों का वह देश है मेरा
चांद तारों से पिरो कर
बनता है परिधान मेरा ।

'तितली' परी है मेरा नाम
'रानी' परी ने सौंपा काम
जग में जा कर खूशी बिखेरूँ
हर बच्चे को दूँ मुस्कान ।

बच्चे मुझको भाते हैं
मुझसे हिलमिल जाते हैं
मिल बैठ कर हम सब फिर
हंसते खिलखिलाते हैं ।

जिसको गम है कोई सताता
वह फिर मेरे पास आता
मिठाई, खिलौने भर कर देती
हंसता हंसता वापस जाता ।

दूर गगन में ले कर जाती
आसमाँ की सैर कराती
किसी भी बच्चे की आँखों में
आँसू को मै देख न पाती ।

बच्चों आओ मेरे पास
जादुई छड़ी है मेरी खास
सबकी इच्छा पूरी करती
ख्वाइस कहो अपनी बिंदास ।

70. हम हैं बच्चे

हम हैं बच्चे दिल के सच्चे
समझ न हमको कच्चे कच्चे
जब अपनी पर हम आ जाते
बड़े बड़ों के छूटते छक्के ।

सात समंदर पार हो जाना
दूर गगन से तारे लाना
सब कुछ अपने बस में भैया
मेहनत से क्यूँ जी चुराना ।

दोस्त है अपनी लाल परी
हाथ में उसके छड़ी सुनहरी
जब भी मांगो, जो भी मांगो
सबकी इच्छा करती पूरी ।

सूरज अपने दादा लगते
दुनिया को रोशन कर देते
संग हमारे खेल खेल कर
जब वह छिपते हम घर आते ।

चंदा अपने मामा लगते
आँख मिचौली खूब खेलते
घटना, बढ़ना, गायब होना
गजब खेल हमको दंग करते ।

हम हैं बच्चे, दिल के सच्चे
सारी दुनिया से हम अच्छे
जब अपनी करतूत दिखाएं
बड़े बड़े खा जाते गच्चे ।

71. माँ तुझको शीश नवाता हूँ ।
माँ तुझको शीश नवाता हूँ । माँ ...

तेरे चरणों की रज पाकर,
अभिभूत हुआ मै जाता हूँ ।
माँ तुझको शीश नवाता हूँ । माँ ...

आशीष वचन सुन तेरे मुंह से,
मै फूला नही समाता हूँ ।
माँ तुझको शीश नवाता हूँ। माँ ...

ममता तेरी जब भी पाता,
मैं राजकुँअर बन जाता हूँ ।
माँ तुझको शीश नवाता हूँ। माँ ...

गम मुझको हैं छू नही पाते,
आंचल जब तेरा पाता हूँ ।
माँ तुझको शीश नवाता हूँ। माँ ...

अवगुन मेरे ध्यान न लाये,
मै हर दिन माफी पाता हूँ ।
माँ तुझको शीश नवाता हूँ। माँ ...

मेरी दुनिया तू ही माँ है,
तुझमें ही सब कुछ पाता हूँ ।
माँ तुझको शीश नवाता हूँ। माँ ...

72. जीवन इस पर वारें ।

देश हमारा हम इसके हैं,
जीवन इस पर वारें ।
जीवन इस पर वारें ।

फूल खिले हर इस बगिया का,
अपना चमन संवारें ।
जीवन इस पर वारें ।

पतझड़ का मौसम न आए,
खूब खिलाएं बहारें ।
जीवन इस पर वारें ।

तूफानों में घिरी हो कश्ती,
मिलकर पार उतारें ।
जीवन इस पर वारें ।

दूर गगन तक हमको जाना,
मीत बना लें तारे ।
जीवन इस पर वारें ।

चल न सकें जो साथ हमारे,
उनके बने सहारे ।
जीवन इस पर वारें ।

संकट कोई भी जब आए,
हम फूल बनें अंगारे ।
जीवन इस पर वारें ।

73. साथी बढ़ते जाना

साथी बढ़ते जाना ।
हाथ पकड़ कर इक दूजे का,
साथी बढ़ते जाना । साथी .....

संकट कितने ही आएं,
इनसे न घबराना ।
साथी बढ़ते जाना । साथी .....

मंजिल दूर भले हो कितनी,
मिलकर कदम बढ़ाना ।
साथी बढ़ते जाना । साथी .....

पथ में चलते हार गए जो,
उनको गले लगाना ।
साथी बढ़ते जाना । साथी .....

कंटक कितनी ही पीड़ा दें,
आँसू न कभी बहाना ।
साथी बढ़ते जाना । साथी .....

रोशन हो यह जग सारा,
शूरज नया उगाना ।
साथी बढ़ते जाना । साथी .....

74. बापू

पुतली बाई का मान
करमचंद की संतान
मोहनदास नाम जिसका
वह बेटा बना महान ।

अहिंसा थी तलवार
सत्य उसकी धार
दुश्मन को भी गले लगा
करते सबको प्यार ।

काम अपना खुद करते
नही किसी से थे डरते
मीलों मीलों तक वह
लगातार पैदल चलते ।

इंसानों में भेद मिटाया
गोरा काला एक बताया
अछूतों को हरि-जन बता
उनको अपने गले लगाया ।

'सत्याग्रह' बना आधार
'सविनय अवज्ञा' एक विचार
'दांडी यात्रा', 'भारत छोड़ो'
इनसे हिली ब्रिटिश सरकार ।

'महात्मा' कहा टैगोर ने
'राष्ट्रपिता' बलाया बोस ने
बस गए हृदय वह सबके
'बापू' पुकारा जन जन ने ।

75. जंगल में दंगल
आया दिन फिर मंगल
जश्न आज है जंगल
होगा बड़ा इक दंगल
मनेगा खूब मंगल ।

स्कूटर पे भालू आया
बंदर अपनी साइकिल लाया
चिट्ठी बांट कबूतर आया
गुर्राता फिर बाघा आया ।

बिल्ली अपनी कार में आई
भागी सरपट लोमड़ आई
मै मै करती बकरी आई
चिड़िया चूँ चूँ उड़ती आई ।

लंगूर कूदा पूंछ दबाये
हाथी घोड़ा साथ में आये
तोता मैना कौआ आये
हिरन जिराफ़ बतियाते आये ।

सबने आ डेरा जमाया
अपना अपना आसन पाया
हेलीकाप्टर में शेर आया
सबसे ऊँचा मंच पाया ।

भाषण देने चीता आया
मोर ने करतब दिखाया
शेर ने फिर हाथ दिखाया
कार्यक्रम को आगे बढ़ाया ।

खली, केन, राक को बुलाया
रिंग में उनको उतरवाया
चिंपाजी को रेफरी बनाया
पहलवानों में दंगल करवाया ।

प्रोग्राम ने तारीफ पाई
विजेता को मिली बधाई
सबने जम ताली बजाई
छक कर खूब मिठाई खाई ।

लक्ष्य से जीत तक

जीवन अनमोल है। आधुनिक युग में हर व्यक्ति बेहतर भविष्य, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं अच्छे जीवन के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। आपको भी यदि सफल होना है; जीवन में कुछ पाना है; महान बनना है; तो निम्न बातों को जीवन में अपना लीजिए।

1. लक्ष्य निर्धारण - सर्वप्रथम हमें अपने जीवन में लक्ष्य का निर्धारण करना है। एक लक्ष्य - बिलकुल निशाना साध कर। अर्जुन की चिड़िया की आँख की तरह। स्वामी विवेकानंद ने कहा था - जीवन में एक ही लक्ष्य साधो और दिन रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो। स्वप्न में भी तुम्हे वही लक्ष्य दिखाई देना चाहिए। और फिर जुट जाओ, उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए - धुन सवार हो जानी चाहिए आपको। सफलता अवश्य आपके कदम चूमेगी। लेकिन एक बात का हमें ध्यान रखना है। हमारे लक्ष्य एवं कार्यों के पीछे शुभ उद्देश्य होना चाहिए। पोप ने कहा था - शुभ कार्य के बिना हासिल किया गया ज्ञान पाप हो जाता है। जैसे परमाणु ज्ञान - ऊर्जा के रूप में समाज के लिए लाभकारी है तो वहीं बम के रूप में विनाशकारी भी।

2. कर्म - लक्ष्य निर्धारण के बाद आता है कर्म। गीता का सार है - कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। कर्म में जुट जाओ। उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, जो आपने चुना है। हर पल। बिना कोई वक्त खोए। गांधी जी ने कहा था - अपने काम खुद करो, कभी दूसरों से मत करवाओ। गांधी जी खुद भी अपने सभी कार्य खुद करते थे। दूसरी बात जो गांधी जी ने कही थी - जो भी कार्य करो, विश्वास और आस्था के साथ, नही तो बिना धरातल के रसातल में डूब जाओगे। यह अति आवश्यक है कि हम अपने आप पर विश्वास और आस्था रखें, यदि हमें अपने आप पर ही विश्वास नही है तो हमारे कार्य किस प्रकार सफल होंगे? जरूरी है - अपने आप पर मान करना, स्वाभिमान रखना। विश्वास और लगन के साथ जुटे रहना। हमारे कार्यों से हमेशा एक संदेश मिलना चाहिए। नेहरू जी से मिलने एक बार एक राजदूत, एक सैनिक एवं एक नवयुवक मिलने आए। तो नेहरू जी ने सबसे पहले नवयुवक को मिलने के लिए

बुलाया, फिर सैनिक को एवं सबसे बाद में विदेशी राजदूत को। बाद में सचिव के पूछने पर बताया कि नवयुवक हमारे देश के कर्णधार हैं, सैनिक देश के रक्षक; उनको सही संदेश मिलना चाहिए। बिना बोले हमारे कर्मों से समाज को संदेश मिलना चाहिए।

3. अवसर - हर अवसर का उपयोग कीजिए। कोई भी मौका हाथ से न जाने दीजिए। स्वेट मार्टेन ने कहा था - अवसर छोटे बड़े नही होते; छोटे से छोटे अवसर का उपयोग करना चाहिए। चैपिन ने तो यहां तक कहा कि जो अवसरों की राह देखते हैं, साधारण मनुष्य होते हैं; असाधारण मनुष्य तो अवसर पैदा कर लेते हैं। कई लोग छॊटे छॊटे अवसर यूं ही खॊ देते हैं कि कोई बड़ा मौका हाथ में आएगा, तब देखेंगे। यह मूर्खता की निशानी है।

4. आशा / निराशा - आप कर्म करेंगे तो जरूरी नही कि सफलता मिल ही जाए। लेकिन आपको घबराना नही है। अगर बार बार भी हताशा हाथ आती है, तो भी आपको निराश नही होना है। मार्टेन ने ही कहा था - सफलता आत्मविश्वास की कुंजी है। ग्रेविल ने कहा था - निराशा मस्तिष्क के लिए पक्षाघात (Paralysis) के समान है| कभी निराशा को अपने पर हावी मत होने दो । विवेकानंद ने कहा था - 1000 बार प्रयत्न करने के बाद यदि आप हार कर गिर पड़े हैं तो एक बार फिर से उठो और प्रयत्न करो। अब्राहम लिंकन तो 100 में से 99 बार असफल रहे। जिस कार्य को भी हाथ में लेते असफलता ही हाथ लगती। लेकिन सतत प्रयत्नशील रहे। और अमेरिका के राष्ट्रपति पद तक जा पँहुचे। कुरान में भी लिखा है - मुसीबतें टूट पड़ें, हाल बेहाल हो जाए, तब भी जो लोग निश्चय से नही डिगते, धीरज रख कर चलते रहते है, वे ही लक्ष्य तक पहुँचते हैं ।

5. आलस्य - आलस्य को कभी अपने ऊपर हावी मत होने दो । कबीर की यह पंक्तियां तो हम सभी के मुंह पर रहती हैं - काल करे सो आज कर । और यह मत सोचो कि आपका काम कोई दूसरा कर देगा । राबर्ट कैलियर ने कहा था - मनुष्य के सर्वोत्तम मित्र उसके दो हाथ हैं । अपने इन हाथों पर भरोसा रखो एवं सतत प्रयत्नशील रहो ।

6. निंदा/ बुराई - जब हमने लक्ष्य ठान लिया है, कर्म कर रहे हैं, अवसरों का उपयोग कर रहे हैं, निराशा से बच रहे हैं, सतत आगे बढ़ रहे हैं तो राह में हमें कई प्रकार के लोग मिलते हैं । हमारे विचार, दृष्टिकोण, लक्ष्य परस्पर टकराते हैं। लेकिन हमें एक चीज से बचना है । दूसरों की बुराई से, उनकी निंदा से। रिचर्ड निक्शन ने कहा था - निंदा से तीन हत्याएं होती हैं; करने वाले की, सुनने वाले की और जिसकी निंदा की जा रही है। स्विफ्ट ने कहा था - आदमी को बदमाशियां करते देख कर मुझे हैरानी नही होती है, उसे शर्मिंदा न देखकर मुझे हैरानी होती है।

इसलिए आवश्यक है कि हम अपनी गलतियों को सहर्ष कबूलें। हम इंसान हैं, हमसे गलतियां भी होंगी। लेकिन गलती को मान लेना सबसे बड़ा बड़प्पन है। और इन गलतियों से सीख लेते हुए हमें आगे बढ़ना है।

7. परोपकार - हमारे लक्ष्य, हमारे कर्मों में कहीं न कहीं परोपकार की भावना अवश्य होनी चाहिए। चाहे वह हमारे समाज, जाति, देश, धर्म, परिवार, गरीबों के लिए हो। परोपकार की भावना जितने बड़े तबके के लिए होगी आप उतने ही महानतम श्रेणी में गिने जाएंगे। गांधी जी ने कहा था - जिस देश में आप जन्म लेते हैं, उसकी खुश हो कर सेवा करनी चाहिए। तुलसीदास जी ने कहा है - परहित सरिस धर्म नहि भाई। नेहरू जी ने भी कहा था - कार्य महत्वपूर्ण नही होता, महत्वपूर्ण होता है

- उद्देश्य; हमारे उद्देश्यों एवं कर्मो के पीछे परोपकार की भावना निहित होनी चाहिए।

8. जीत - आपने लक्ष्य ठाना; कर्म कर रहे हैं; अवसरों का उपयोग कर रहे हैं; निराशा, आलस्य और निंदा से बच रहे हैं; परोपकार की भावना से निहित हैं। बस एक ही चीज अब बचती है। जीत। जीत निश्चित ही आप की है। ऋग्वेद में भी लिखा है - जो व्यक्ति कर्म करते हैं, लक्ष्मी स्वयं उनके पास आती है, जैसे सागर में नदियां।

जो इन सब पर चलते हैं, असाध्य कार्य भी संभव हो जाते हैं। दो उदाहरण देना चाहता हूँ -

1. एक गुरू ने अपने शिष्यों को बांस की टोकरियां दी और कहा कि इनमें पानी भर कर लाओ। सभी शिष्य हैरान थे, यह कैसा असंभव कार्य गुरूजी ने दे दिया। सब तालाब के पास गए। किसी ने एक बार, किसी ने दो बार और किसी ने दस बीस बार प्रयत्न किया। कुछ ने तो प्रयत्न ही नही किया। क्योंकि पानी टोकरी में डालते ही निकल कर बह जाता था। लेकिन एक शिष्य को गुरू पर बहुत आस्था थी, वह सुबह से शाम तक लगातार लगा रहा। प्रयत्न करता रहा। शाम होते होते धीरे धीरे बांस की लकड़ी फूलने लगी और टोकरी में छिद्र छोटे होते गए और धीरे धीरे बंद हो गए। इस तरह टोकरी में पानी भरना संभव हो सका।

2. 1940 के ओलंपिक खेलों में शूटिंग के लिए सभी की नजरें हंगरी के कार्ली टैकास पर टिखी थीं; क्योंकि वह बहुत अच्छा निशाने बाज था। लेकिन विश्वयुद्ध छिड़ गया। 1944 में भी विश्वयुद्ध के चलते ओलंपिक खेल नही हो पाए। विश्वयुद्ध तो समाप्त हो गया लेकिन 1946 में एक दुर्घटना में कार्ली का दायां हाथ कट गया। जब हाथ ही नही तो शूटिंग भला कैसी? कार्ली ने घर छोड़ दिया। सबने सोचा निराशा के कारण कार्ली ने घर छोड़

दिया है। लेकिन जब 1948 में लंदन में ओलंपिक खेल हुए तो सबने हैरानी से देखा कि शूटिंग का गोल्ड मैडल लिए कार्ली खड़ा है। बाएं हाथ से गोल्ड मैडल जीता।

9. अहंकार - जीत आपने प्राप्त कर ली। अब एक बात का और ध्यान रखना है। कभी अहंकार को अपने ऊपर हावी नही होने देना है। अहंकार मनुष्य के विनाश का कारण बनता है। सहजता और सौम्यता बड़प्पन के गुण हैं। शेक्सपीयर ने कहा था - अहंकार स्वयं को खा जाता है। अपनी दो पंक्तियों के साथ -

हिम बन चढ़ो शिखर पर यां मेघ बन के छाओ,
रखना है याद तुम्हे सागर में तुमको मिलना।